व्यवसायी मनुष्यो वाचन, मनन करी शकता नथी. तेओने आ लघु ग्रन्थ वडे 'षड्द्रव्य' नो अभ्यास थाय ते माटे शास्त्रविशारद गुरुवर्य श्रीमद् बुद्धिसागरजीसूरीश्वरे सं. १९५८ नी सालमां पादरा गामे आ ग्रन्थ रच्यो हतो अने तेने वकील मोहनलाल हेमचंदे पोते प्रगट कर्यो हतो. आ ग्रन्थनी प्रथम आवृत्ति खलास थवाथी अने अभ्यासीओने ते उपयोगी होवाथी फरीथी वकील मोहनलाल हेमचंदनी द्रव्य साहाय्यथी मंडळने ग्रन्थमाळाना २५ मा ग्रन्थ तरीके प्रगट करवानो शुभ प्रसंग मळ्यो छे.

प्रथम आवृत्ति करतां केटलेक स्थळे श्रीमदे स्वहस्ते सुधारो वधारो कर्यो छे अने तेमां पण खास करी समकितनुं स्वरूप विशेष प्रकारे आलेख्युं छे.

बीजाओने ते मार्गे प्रेरशे, एवी आशा
आ ग्रन्थना प्रगटार्थे द्रव्यनी सहाय करनार
कील मोहनलाल हेमचंदने धन्यवाद
विरमीए छीए.

मुंबाई.
चंपागली,
जेष्ट वदि ११

ली.
अध्यात्म ज्ञानप्रस
मंडळ.

લંબીઓ તેને પ્રેમપૂર્વક વાંચે છે. દરેક ગ્રન્થોમાં અધ્યાત્મજ્ઞાન અને તત્ત્વજ્ઞાન સંબંધી વિવેચનછે.

વૈરાગ્ય, ઉપદેશક, અને બોધક, પદો—ભજનો-તે તે વિષયમાં લિન્નતા કરી નાખે છે. દરેક પદોનો સાર વિચારણીય છે. અનેકાન્ત દૃષ્ટિથી, હૃદયની વિશાળતાપૂર્વક અને પ્રિય તથા પથ્ય-વાણીથી હરેક જણને ઉત્તમ બનાવી શકાય છે અને તે મુજબ આ ગ્રન્થો છે.

માત્ર વાંચકોના હિતાર્થે, ઉદાર ગૃહસ્થોની સહાયવડે, કોઈપણ ગ્રન્થપ્રકાશક મંડળ કરતાં ઓછામાં ઓછી કીંમત રાખવાની પહેલ આ મંડળેજ કરી છે—ઓછી કીંમત છતાં છપાઇ-કાગળ—બંધાઇ વગેરે કામ સુંદર થાય છે, તદ્ ઉપરાંત વધુ પ્રચારાર્થે—પ્રભાવના વિદ્યાર્થીઓને ઇનામ, અને ભેટ આપનાર માટે વધુ નકલો મંગાવનારને (શીલીકમાં હોય તો) બની શકતી ઓછી કીંમતે આપવામાં આવે છે.

શ્રાવક ધર્મસ્વરૂપ ભાગ ૧
લો (આવૃત્તિ ત્રીજી) ૪૦ ૦–૧–૦
શ્રાવક ધર્મસ્વરૂપ ભાગ ૨
જો (આવૃત્તિ ત્રીજી). ૪૦ ૦–૧–૦
ભજન પદસંગ્રહ ભાગ ૬ ઠ્ઠો. ૨૦૮ ૦-૧૨-૦
વચનામૃત.. .... ૩૮૮ ૦-૧૪-૦
યોગદીપક.. .... ૨૬૮ ૦-૧૪-૦
જૈન ઐતિહાસિક રાસમાળા ૪૦૮ ૧–૦–૦
આનન્દઘન પદસંગ્રહ ભા-
વાર્થસહિત ૮૦૮ ૨–૦–૦
અધ્યાત્મ શાન્તિ (આ-
વૃત્તિ બીજી).... ... . ૧૩૨ ૦–૩–૦
૭ કાવ્યસંગ્રહ ભાગ ૭ મો... ૧૫૬ ૦–૮–૦
૮ જૈનધર્મની પ્રાચીન અને
અર્વાચીન સ્થિતિ.... .... ૯૬ ૦–૨–૦
૯ કુમારપાલ ચરિત્ર (હિંદી).. ૨૮૭ ૦–૬–૦

૩૦. ૩૧. ૩૨. ૩૩. ૩૪. સુખસા-
ગર ગુરૂગીતા તથા પટ્ટાવ-
લીસહ ગુરૂચરિત્ર વિભાગો. ૩૦૦ ૦-૪-
૩૫ ષડ્દ્રવ્ય વિચાર (દ્વિતીયાવૃત્તિ) ૨૪૮ ૦-૪-



गणित चरण करण कथा, द्रव्य ए चार उदा
द्रव्य ए चारमां सारछे, धरतां भवजल पार
अति गहन द्रव्यानुयोग, उदाधि सम कहे जि
तेनो लेश हुं वर्णवुं, अति उत्कंठित दीन
भाग्य दशा जो आकरी, सद्गुरु करुणा होय
निर्मळ बुद्धयादिकथी, समजे विरलो कोय ४
योग्य जीवने एहनो, लागे मनमां राग;
सम्मातिग्रंथे भाखीयुं, ते साधु महा भाग ५
उदासीनता संपजे, धरतां एहनुं ध्यान
निर्मल थावे आतमा, पामे केवलज्ञान ६
द्रव्यतणा पड् भेद छे, धर्माधर्म विचार
आकाश पुद्गल कालने, आतम ए मनोहार ७
पंच धुर ते हेय छे, आतम उपादेय
गुण पर्याय छे तेहना, भविजन ने हेय ज्ञेय ८

ज्यां सुधी आत्मानुं शुद्ध स्वरुप
ळखातुं नथी त्यांसुधी शुद्ध सद्दहणा थती न

श्री जिनेश्वर कथीत वाणी सांभळ
आत्मानुं स्वरुप यथातथ्य समजायछे,
ज्ञाननो घणो खप करवो. ज्ञान विना
अजीव आदि पदार्थनुं सम्यक् ज्ञान
नथी. आत्मा नित्य केवी रीते छे; अ
केवी रीते छे; उत्पाद व्यय अने ध्रुव श
स्तु छे तेनुं ज्यां सुधी ज्ञान थतुं नथी, त्य
धी जीव सम्यक् वस्तु जाणी शकतो
अने हेय ज्ञेय अने उपादेय पण जाणी
तो नथी. सम्यक् वस्तुना ज्ञान थकी सम
प्राप्त थाय छे. माटे ज्ञाननी आवश्यक

ज्ञानना पण बे भेद छे १ व्यवह
२ निश्चयज्ञान.

अनंतज्ञान, अनंत दर्शन, अनन्त चारित्र अने अनंत वीर्यनो भोक्ता आत्मा अरूपी असंख्य प्रदेशमयी छे. तेनुं जे ज्ञान तेने निश्चय ज्ञान कहे छे.

आत्मा वस्तु अनादि अनंत छे, तेने अनादिथी कर्मनो संयोग थयो छे, तेथी दुःखी थाय छे. भवी साथे कर्मनो संबंध अनादि सांत भांगे छे. अभवी साथे कर्मनो संबंध अनादि अनंतमे भांगे छे.

कर्मना आठ प्रकार छे–ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र, अने अंतराय एम आठ कर्म छे, तेनी उतर प्रकृति १५८ छे. ते कर्मरुप जड वस्तुनो प्रपंच विचित्र छे. जेम ब्राह्मीरुप जड औ-

स्तिकाय (५) काळ (६) जीवास्तिकाय-ए
छ द्रव्य शाश्वतां छे.

ए छ द्रव्यना अनुक्रमे गुण कहे छे.

१ धर्मास्तिकायना गुण ४ (१) अरूपी
(२) अचेतन (३) आक्रिय (४) गतिसहाय

२ अधर्मास्तिकायना गुण ४ (१) अ-
रूपी २ अचेतन (३) आक्रिय (४) स्थितिसहाय

३ आकाशास्तिकायना गुण ४ (१) अ
रूपी (२) अचेतन (३) आक्रिय (४) अव-
गाहनादान

४ पुद्गलास्तिकायना गुण४ (१) रूपी
(२) अचेतन (३) सक्रिय (४) मिलण विख-
रण पूरणगलन

५ कालद्रव्यना गुण ४ (१) अरूपी

३ रस (४) स्पर्श (अगुरुल-
घु सहित)

५ कालद्रव्यना (१) अतीत(२) अनागत
(३) वर्तमान(४) अगुरु लघु

६ जीवद्रव्यना (१) अव्याबाध (२) अनवगाह
(३) अमूर्तिक (४) अगुरु लघु

ए छ द्रव्यना छ पर्याय कह्या.

हवे ए छ द्रव्यना गुण पर्यायनुं साधर्म्यकहे छे.

अगुरु लघु पर्याय छए द्रव्यमां सरखो छे. अरूपी गुणे करी पांच द्रव्यनुं साधर्म्य छे. पण पुद्गल द्रव्यमां अरूपी गुण नथी. कारण के पुद्गलद्रव्य रूपी छे. तथा अचेतन गुणे करी धर्मास्तिकाय; अधर्मास्तिकाय; आ-

३ रस (४) स्पर्श (अगुरुल-
घु सहित)

५ कालद्रव्यना (१) अतीत(२) अनागत
(३) वर्तमान(४) अगुरु लघु

६ जीवद्रव्यना (१) अव्याबाध (२) अनवगाह
(३) अमूर्तिक (४) अगुरु लघु

ए छ द्रव्यना छ पर्याय कह्या.

हवे ए छ द्रव्यना गुण पर्यायनुं साध-
र्म्यकहे छे.

अगुरु लघु पर्याय छए द्रव्यमां सरखो
छे. अरुपी गुणे करी पांच द्रव्यनुं साधर्म्य छे.
एक पुद्गल द्रव्यमां अरुपी गुण नथी. का-
रण के पुद्गलद्रव्य रुपी छे. तथा अचेतन

ाश; पुद्गल अने काल ए पांच द्रव्यनुं सा-
र्मिपणु छे. जीवद्रव्यमां अचेतन गुण नथी,
ेतनालक्षणोजीव इति वचनात्' सक्रियगुणे
री जीव तथा पुद्गल ए बे द्रव्यनुं व्यव-
ारथी साधर्म्य छे. कर्म थकी रहीत सिद्ध
ीवोमां सक्रिय गुण नथी, बाकीना चार
्व्यमां सक्रिय गुण नथी; गति सहाय गुण
्क धर्मास्तिकायमां छे. बाकीना पांच द्रव्य-
ां नथी, स्थिति सहाय गुण एक अधर्मा-
स्तिकायमां छे, बीजा पांच द्रव्यमां नथी.
था अवगाहना गुण ते एक आकाशास्ति-
ाय द्रव्यमां छे, बाकीना पांच द्रव्यमां न-
ी. वर्तना गुण एक काल द्रव्यमां छे, बीजा
ांच द्रव्यमां नथी. मिलण विखरण गुण पु-
द्गल द्रव्यमां छे, बाकीना पांच द्रव्यमां नथी,

तथा ज्ञानना गुण ने एक जीवद्र[illegible]
आत्मीना पांच द्रव्यमां नथी, ए गु[illegible]
कोइ द्रव्यना कोइ द्रव्यमां मळता न[illegible]

एक धर्मास्तिकाय, बीजो अ[illegible]
काय, त्रीजो आकाश, ए त्रण द्र[illegible]
गुण तथा चार पर्याय सरखा छे, अने
अचेतन, अक्रिय ए त्रण गुणे करी [illegible]
व्य पण ए समान छे.

हवे ए छ द्रव्यना गुण पर्याय
जाणवाने सूत्रपाठ गाथा कहे छे.

परिणामि जीव मुत्तो सपएसा एग[illegible]
किरिआय ॥ णिच्चं कारण कत्ता स[illegible]
इयर अप्पवेसे ॥ २ ॥

ामी छे. कारण के धर्मास्तिकाय पोतानामां
ंश्चयनये परिणमी रह्युं छे, पण बी-
ा पांच द्रव्यमां परिणमतुं नथी. बीजुं अ-
ाधर्मास्तिकाय द्रव्य पण निश्चयनये पो-
ाना स्वरुपमां परिणमी रह्युं छे, पण बी-
ा पांच द्रव्यमां परिणमतुं नथी. आकाशा-
स्तिकाय पण निश्चयनये पोताना स्व-
रुपमांज परिणमे छे. काल द्रव्य पण निश्चय
नये पोताना स्वरुपमां परिणमी रह्युं
छे, पण बीजा पांच द्रव्यमां निश्चयनये
परिणमतुं नथी. जो निश्चयनये जीव
पुद्गल द्रव्यमां परिणमेतो कोइकाले
कर्म थकी रहीत थइ सिद्धिपद पामे नही.
व्यवहारनये जीवनाटकीयानी पेठे एकेंद्री;
बेरेंद्री; तेरेंद्री; चौरेंद्री; देवता; मनुष्य; तिर्यंच;

नारकी. अने समुर्छिम पंचेंद्रीक
पुद्गलना वेष पेहेरी नवां नवां ना
आत्मभान भूल्यो छतो चार ग
सार नगरना चोराशीलाख चउटा
दिकाळथी अनेक दुःख सहन करत
फरे छे. ए रीते आ जीव कर्मरूप पु
परिणम्यो छतो भटक्या करे छे. प
श्चयनये जीव सदा शाश्वतो छे,
सत्ताए सिद्ध समान छे. व्यव
जीव अने पुद्गल ए बे द्रव्य परिणा
तथा पुद्गलास्तिकाय द्रव्यना पण
नये परमाणुआ सर्व पोताने स
रह्या छे, अने व्यवहार नये प

काले ए खंध विखराइ जात नहीं. सदा काल खंध भावेज रहेत. परंतु तेमतो रहेता नथी, माटे व्यवहारनये पुद्गलना परमाणुआ मळी खंध थाय छे, अने पाछा खंध विखराइ पण जाय छे. निश्चयनये परमाणुआओ पोतपोताने स्वभावे सदा शाश्वता छे, पण कोइ काले वधशे घटशे नहीं. वाळ्या वळशे नहीं. गाळ्या गळशे नहीं. ए रीते ए छ द्रव्य निश्चयनये पोतपोताने स्वभावे परिणामिक जाणवां. व्यवहार नये धर्म; अधर्म; आकाश; अने काल ए चार द्रव्य अपरिणामी छे. अने जीव तथा पुद्गल ए बे द्रव्य परिणामी छे. केमके व्यवहार नयने मते जीव समये समये अनंतां कर्मरूप वर्गणानां दळीयां ले छे, अने समये समये अनंतां

कर्मरूप वर्गणानां दळीयां खेरवे छे, पण
श्रयनये कर्मनुं ग्रहण जीव करतो
कोइ काले कर्मथकी रहीत थाय
आत्मा राग अने द्वेष परद्रव्यप
रिणमे छे, रागद्वेष रुप मोहनी अशु
पुद्गल परमाणुआना स्कंधोने ग्रहण
अने मनुष्य देवता नारकी तथा तिर्य
शरीर रुप खंध मते नीपजावे छे. ते
स्थिति प्रमाणे रहे छे, वळी पाछा खेरवे
वळी बीजा परमाणुआओने ग्रहण करी
शरीर रुप खंधने नीपजावे छे, केटला
पुद्गल परमाणुआ स्कंधरूपकर्मने ग्रहण क
पाछा खेरवे छे, एम व्यवहार नये अना
काळथी जीव प्रमाणु...

द्गलनो संबंध थवाथी जीव सुख माने छे, अने अशुभ पुद्गलनो संबंध थवाथी जीव दुःख माने छे, ते पुण्य पापरूप जाणवुं पण ए स्ववस्तु नथी. एम व्यवहार नयथी जीव अने पुद्गल ए बे द्रव्य परिणामी छे.

हवे छ द्रव्यमां जीव द्रव्य अने अजीव द्रव्यनुं स्वरूप बतावे छे, नाणंच दंसणंचेव चरित्तंच तवोतहा, वीरियंउवओ-गोअ एअंजीअस्सलखणं. ॥ १ ॥

अर्थ–ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य अने उपयोग जेनामां होय, तेने जीव कहे छे. अने बाकीनाने अजीव कहे छे. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशस्तिकाय, पुद्गला-स्तिकाय अने काल, ए पांच द्रव्य अजीव

छे. कारण के ज्ञान, दर्शन, चारित्र,
वीर्य अने उपयोगरुप जीवनुं लक्षण ते
नथी. जीव द्रव्य ते जीव छे. ' चेतनाल
जीव इतिवचनात् '

छए द्रव्यमां पुद्गल द्रव्य मूर्तिमं
अने शेष पांच द्रव्य अमूर्त छे. धर्म,
आकाश, अने काल ए चार
अमूर्त छे. जीवद्रव्यना वे भेद छे.
अने संसारी, तेमां सिद्धना जीव
र्तिमंत छे. अने संसारी जीवो क
पाधिथी मूर्तिमंत छे. निश्चयनये
अरुपी छे माटे अमूर्ति कहेवाय छे.
व्यवहारनये करी तेमना

अने एकेक परमाणुआमां अनंता पर्याय ए
छे. परमाणुआ अनंत छे. ए रीते पांच द्र
सप्रदेशी छे. अने कालद्रव्य अप्रदेशी
एनो गणित काल तो उत्पाद व्ययरूप पर
टण स्वभावे अढी द्वीप प्रमाणे जाणवो.
रीते षड् द्रव्यमां सप्रदेशी अने अप्रदेशीन
विचार कह्यो.

षड् द्रव्यमां त्रण द्रव्य एक, अने त्रण
द्रव्य अनेक जाणवां. कारणके धर्मास्तिकाय द्र-
व्य असंख्यात प्रदेशी,लोकव्यापी एक जाण-
वुं. तेमज अधर्मास्तिकाय द्रव्य असंख्यात
प्रदेशी लोकव्यापी एक जाणवुं. तेमज आ-
काशास्तिकाय द्रव्य पण अनंत प्रदेशी लोका-
लोकव्यापी एक जाणवुं, एम ए त्रण द्रव्य
ते एक कहीए, अने जीव द्रव्य छे ते लोक

व्यापी अनंतां जाणवां, ते एकेक जीवना असंख्याता प्रदेश छे, अने एकेक प्रदेशे अनंति कर्मनी वर्गणाना थोकडा लाग्या छे. तथा जीवथकी रहीत घटपट दंड प्रमुख वीजा पुद्‌गलना छुटा स्कंध पण अनंता छे, माटे जीव थकी पुद्‌गल द्रव्य अनंतगुणां जाणवां, अने एकेकी कर्म वर्गणामां अनंत पुद्‌गल परमाणुआ रह्या छे ते परमाणुआ द्रव्य थकी सदाकाळ शाश्वता छे,माटे एकेक परमाणुआमां अनंता उत्पाद व्ययरुप कालना समय अतीतकाले व्यतीत थइ गया. तथा हजी पण अनंता समय आवते काले व्यतीत थाशे, अने परमाणुआ तो तेना तेज सदाकाळ शाश्वता छे. माटे पुद्‌गलद्रव्य थकी पण काळद्रव्यना समय अनंता जाणवा,

ए रीते जीव पुद्गल अने काल ए त्रण अनेक कहीए. ए रीते एक अनेकनो विचार षट् द्रव्यमां कह्यो.

हवे षट् द्रव्यमां क्षेत्र अने क्षेत्रीनो
विचार दर्शावे छे.

छ द्रव्यमां आकाश द्रव्य, क्षेत्र छे अने बाकीनां धर्म, अधर्म, काल, पुद्गल, अने आत्मा, ए पांच द्रव्य आकाश क्षेत्रमां रहे छे, माटे क्षेत्री जाणवां. ते केवी रीते रह्यां छे ते बतावे छे. आंखनी पांपणनो एक वाळ ग्रहण करीने तेना खंड [भाग] एवा करी एके एक खंडना बे खंड न थाय. एवा सूक्ष्म खंड प्रमाणे आकाश क्षेत्र लइए, तेटलामां आकाशना असंख्याता प्रदेश रह्या छे, अने

टलामां धर्मास्तिकायना असंख्यात प्रदेश छे, था अधर्मास्तिकायना पण असंख्यात प्रदेश छे. अने निगोदीया गोळा पण असंख्याता रह्या छे. ते सर्व पड्या मुकीने तेमांहेलो एक गोळो लहीए ते एक गोळामां असंख्याती निगोद रही छे. ते असंख्याती निगोद पडती मुकीने ते मांहेथी एक लहीए, ते एक निगोदमां पण अनंता जीव रह्या छे, ते जीवनी गणत्री बतावे छे, अनादि एक अतीतकाल छेडा रहीत, अनंतो काल गयो, तथा अनागत काल ते पण छेडा रहीत छे. ते सर्वेना जेटला समय थाय, तेनी साथे वर्तमान कालनो एक समय पण गणवो. एटले अतीत अनागत अने वर्तमानकालना जेटला समय थाय, ते सर्वने अनंतगुणा करीए एटला जीव

एक निगोदमां रह्या छे. ते सर्व जीव पड्या मुकीने ते मांहेथी मात्र एक जीव लइए ते एक जीवना असंख्याता प्रदेश छे. ते मध्ये एकेका प्रदेशे अनंती कर्मनी वर्गणाओ लागी छे. ते सर्व वर्गणाओ पडती मुकीने ते मांहेथी एक वर्गणा लहीए, ते एक वर्गणामां अनंता पुद्गल परमाणुआ रह्या छे. ते बतावे छे.

प्रथम परमाणुआना बे भेद छे. एक छुटा परमाणु अने बीजा खंधना. वळी स्कंधना बे भेद छे. एक जीव सहीत खंध, अने बीजा जीव रहीत खंध, ते घटपट दंड प्रमुख अजीव खंध जाणवा. त्यां प्रथम जीव सहित खंधनो विचार लखीए छीए.

बे परमाणुआ भेला थाय ते वारे द्व्यणुक खंध कहेवाय छे. त्रण परमाणुआ भे-

ळा थाय, तेवारे त्र्यणुक खंध कहेवाय छे, एम असंख्याता परमाणुआ भेळा थाय, त्यारे असंख्याताणुक खंध कहेवाय छे, एटला परमाणुआना खंध थाय त्यां सुधीना खंध ते सर्वे जीवने ग्रहण करवा योग्य थता नथी. एटला परमाणुआना खंधने कोइ जीव ग्रहण करी शकतो नथी. परंतु अभव्य राशिना जीव चुम्मोत्तरमे बोले छे, ते थकी अनंत गुणाधिक परमाणुआ ज्यारे भेळा थाय, तेवारे औदारिक शरीरने लेवा योग्य वर्गणा थाय छे. ते औदारिकनी वर्गणाथी अनंत गुणाधिक दलीआं जेवारे भेलां थाय तेवारे वैक्रिय शरीरने लेवा योग्य वर्गणा थाय छे. वैक्रियनी वर्गणाथी अनंत गुणाधिक दळीयां जेवारे भेळां थाय, तेवारे आहारक

[illegible]

थाय छे तेवा भाषानी वर्गणाथी अनंत गुणा-
धिक स्कंधोमां भेगां थाय, तेवारे एक श्वासो-
श्वासने लेवा योग्य वर्गणा थाय छे. ते श्वा-
सोश्वासनी वर्गणाथी तेवारे अनंत गुणा-
धिक स्कंधोमां भेगां थाय, तेवारे एक मनने
लेवा योग्य वर्गणा थाय छे, ए सातमी मनो-
वर्गणाथकी पण आठमी कार्मण वर्गणामां अनं-
तगुणाधिक परमाणुआ स्कंध जाणवा. एवी
जीवने रागद्वेषनी अशुद्धताथी अनंत कर्मनी

वर्गणाओ लागी छे, तेथी जीवना ज्ञानादिक गुण दबाई गया छे. माटे जीव थकी पुद्गल द्रव्य अनंत गुणा जाणवा. ते पुद्गलरुपी छे. अचेतन छे. सक्रिय छे. पूरणगलन छे. जीवे अनंती पुद्गल परमाणुआ रुपी अेंठ वारंवार ग्रहण करी, तोपण तेथी तृप्ति पामतो नथी. पारकी वस्तु पोतानी मानी वेठो छे. अहो जीव द्रव्य अनंत शक्तिवाळुं छे तेने पु-द्गलद्रव्ये पोताना कबजामां लीधुं छे, तेने संगे राच्यो माच्यो छे, माटे परवस्तु उपरथी मोह उतारवो, अने पुद्गल द्रव्य अन्य वस्तु जाणी तेनाथी दूर रेहेवुं ए सार छे.

पूर्वे कहेली आठ वर्गणा जीवने अनादि काळथी लागी छे. औदारिक; वैक्रिय; आहा-

ाय, अधर्मास्तिकाय, आकाश द्रव्य, अने
ाल ए चार अक्रिय छे. जीव अने पुद्गल,
े बे द्रव्य सक्रिय, व्यवहार नये छे. धर्मा-
स्तिकाय द्रव्य ते जीव अने पुद्गल ए बे
व्यने चालवामां सहाय आपवा रुप क्रिया
रे छे तथा निश्चयनये अधर्मास्तिकाय पण
ीव द्रव्य अने पुद्गल द्रव्यने स्थिर थवामां
हाय गुणरूप क्रिया करे छे. तथा
नेश्चयनये आकाशास्तिकाय द्रव्य पण
ीव तथा अजीवने अवगाहना आपे छे.
तथा निश्चयनये काल द्रव्य पण जीव
अजीवरूप वस्तुमां पोतानी वर्तनारूप
क्रिया करतो जाय छे. तथा निश्चयनये
जीव द्रव्य पण पोताना स्वरूपमां रमवारूप
क्रिया करतो जाय छे, कारणके जो निश्चय-

नये शुभाशुभ कर्म [illegible] स्वरूपमां र- मण करनारूप क्रिया करतो होय तो कोई काळे जीव मोक्ष पामत नहीं. माटे निश्चय नये तो जीव पोताना स्वरूपमां रमण रूप क्रिया करे छे. निश्चय नये पुद्- गल परमाणुओ पण अनादि काळना पो- तानी मळवा विखरवारूप क्रिया करता जाय छे. ए रीते छए द्रव्य निश्चय नये पोत- पोतानी क्रिया करे छे माटे सक्रिय छे.

व्यवहारनये धर्म, अधर्म, आकाश अने काळ, ए चार द्रव्य अक्रिय जाणवां. तथा जीव अने पुद्गल ए बे-द्रव्य सक्रिय जाणवां. कारणके व्यवहार नयने मते जीव, रागद्वेषरूप अशुद्धताए करी समय समय अ-

जीव चारगतिमां जन्म मरणे देवता, मनुष्य, तिर्यंच, अने नारकीरुप नवा नवा भव धारण करे छे, माटे अनित्य कहीए. तथा व्यवहारनये पुद्गल द्रव्यना खंध पण सर्व अनित्य जाणवा, कारण के पुद्गल द्रव्यना खंध बने छे, अने पाछा विखरे छे, माटे अनित्य जाणवा. द्रव्यास्तिकायना मते जीव असंख्यात प्रदेशी नित्य सदाकाल शाश्वतो छे, अने अशुद्ध अनित्य पर्याये जीव अशाश्वतो जाणवो. कारणके अशुद्ध अनित्य पर्याये जीव चार गतिरुप संसारमां उत्पाद व्ययरुप पलटण स्वभावे वर्ते छे. ते आवी रीतेमनुष्य भवना पर्यानो व्यय थयो अने देवताना भवना पर्यायनो उत्पाद थयो. वळी तिर्यंच भवना पर्यायनो व्यय थयो, अने म-

नुष्य भवना पर्यायनो उत्पाद थयो. एम जीव अशुद्ध अनित्य पर्याये उत्पाद व्ययरुप पलटण स्वभावे चार गतिरूप संसारमां सदाकाल वर्ते छे, अने जीव एनो ए ध्रुवपणे शाश्वतो छे, तथा जीवना जन्म मरण थाय छे ते सर्व उत्पाद व्यये थाय छे, माटे द्रव्यास्तिकनये जीवने नित्य समजवो, अने पर्यायास्तिक नये करी जीवने अनित्य समजवो. ए रीते षड् द्रव्यमां निश्चय व्यवहारे नित्यानित्यपणुं जाणवुं.

षड् द्रव्यमां जीव द्रव्यने पांच द्रव्य कारण रुप जाणवां, अने जीव द्रव्य अकारण जाणवुं. जेमके जीवकर्त्ता अने तेने धर्मास्तिकाय कारण मळ्युं, तवारे जीवने चालवा हालवा रुप कार्य थयुं. तेमज जीवकर्त्ता अने

तेने अधर्मास्तिकाय रुप कारण मळ्युं, तेवारे जीवने स्थिर रहेवा रुप कार्य नीपज्युं. तेमज जीवकर्त्ता अने तेने आकाशास्तिकाय कारण मळ्युं तेवारे जीवने अवगाहना रुप कार्य वन्युं. तेमज जीवकर्त्ता अने तेने पुद्गलास्तिकाय रुप कारण मळ्युं तेवारे जीवने समय समय अनंता कर्म स्कंधो लेवा खेरववा रुप कार्य नीपज्युं. तेमज जीव द्रव्यकर्त्ता अने तेने काल द्रव्य कारण मळ्युं. तेवारे नवा पुराणा वर्तनारुप कार्य नीपन्युं. ए रीते षड् द्रव्यमां जीवने पांचे द्रव्य कारण पणे जाणवा, अने जीव पोते अकारण छे.

घणी प्रतियोमां संक्षेपे एटलुं छे के छ द्रव्यमां एक जीव द्रव्य कारण छे, बाकीनां धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्ति-

गुणठाणांनु जेह, तेने शुद्धव्यवहारनो करी कहीये. पहेले गुणठाणे अनंतानुबंधिनी चोकडी हती ते खपावी अने चोथे गुणठाणे आव्यो त्यारे जीवने एक सम्यक्त्व गुण प्रकाशित थयो, अने अप्रत्याख्यानीनी चोकडी खपावी त्यारे पांचमुं गुणठाणुं प्राप्त करी देशविरति गुण प्राप्त कर्यो. तथा प्रत्याख्यानीनी चोकडी खपावी तेवारे छठे सातमे गुणठाणे सर्वविरति गुण पाम्यो. अगीआरमे बारमे गुणठाणे पहोंची रागद्वेष रुप मोहनीय कर्म खपावी बारमे गुणठाणे घातीकर्मनो क्षय करी तेरमे गुणठाणे केवलज्ञान पाम्यो. ए रीते पूर्वनां गुणठाणांनु छोडवुं, अने उपरनां गुणठाणांनु ग्रहण करवुं तेने शुद्ध व्यवहार नय जाणवो.

जीव कर्मरूप अशुद्धताने टाळे, अने गुण रूप शुद्धताने नीपजावे, ते जीवमां शुद्ध व्यवहार नय जाणवो.

हवे बीजा अशुद्ध व्यवहारनये जीव-मां अज्ञान रागद्वेष, अनादिकाळना शत्रु थइ लाग्या छे, तेथी जीवमां अशुद्धपणुं जाणवुं. ए अशुद्धताए जीवने समय समय अनंतां कर्मरूप दलीआं सत्ताए लागे छे. ए अना-दिकालनी अशुद्ध जाणवी. ए अशुद्ध व्य-वहारनये जीवकर्त्ता छे तेनुं स्वरूप जाणवुं. हवे त्रीजा शुभ व्यवहार नये जीव दान, शी-ल, तप, भाव, पूजा, प्रभावना, सेवा, भक्ति साधर्म्यवात्सल्य, विनय, वैयावृत्य, उप-कार, करुणा, दया, यत्ना, मीठुं मनोहर व-चन बोलवुं, अने सर्व जीवनुं रूडुं चिंतववुं

ए आदि अनेक प्रकारनी जीवने शुभ करणी जाणवी. ए शुभ व्यवहारनये जीव कर्त्ता कहीये. बीजा अशुभ व्यवहारनये जीव क्रोध, मान, माया, लोभ, विषय, कषाय, हास्य, रति, अरति, भय, शोक, दुगंछा, निद्रा, चाडी, ममता, हिंसा, मृषा, अदत्त, मैथुन, अने परिग्रह, ए आदि अनेक प्रकारनी जीवने अशुभ करणी जाणवी. ए अशुभ व्यवहारनये जीवकर्त्ता जाणवो.

हवे पांचमा उपचरित व्यवहारनये घर, कुटुंब, परिवार, हाट, वखार, गाम, गरास, देश, चाकर, दास, दासी, वाणोतर, राज्य, वाडी, वन, आराम, कुवा अने सरोवर, ए आदि अनेक प्रकारनी वस्तु ते पोतानाथी प्रत्यक्षपणे जुदी छे, तेने जीव अज्ञानपणे पोतानी करी

जाणे छे. तेने मारुं मारुं करतो फरे छे, तेनी वृद्धि देखी खुशी थाय छे, तेनो नाश देखी रडे छे, कुटे छे, शोक करे छे, अने तेने माटे पोताना प्राणनो पण नाश करे छे, तेने पोतानुं मानी तेना कर्त्तामानी जीव, पापनो अधिकारी पोते थाय छे, ए रीते उपचरित व्यवहारनये जीवने कर्त्ता जाणवो.

हवे छट्ठा अनुपचरित व्यवहारनये जीव शरीर आदि परवस्तु, जे पोताना स्वरूपथी प्रत्यक्षपणे जुदी छे, पण परिणामिक भावे लोली भूतपणे एकठी मली रही छे, तेने जीव पोतानी करी जाणे छे. एवां शरीरने जीव अनंतिवार पाम्यो, अने अनंतिवार ते शरीरनो त्याग कर्यो, तोपण अज्ञानपणे जीव तेने पोतानुं करी जाणे छे, तेने वास्ते अ-

नेक प्रकारनी हिंसा करे छे, असत्य बोले छे, अदत्त ग्रहण करे छे, पण जो ते वस्तु पोतानी थती नथी, पण पाप करी तो न भारे थाय छे. ए रीते अनुपचरित असद्भूत व्यवहारनये जीव कर्त्ता जाणवो. ए रीते छ प्रकारे व्यवहारनयने मते जीवने कर्त्तापणुं देखाड्युं.

सव्वगयइयर—कहेतां सर्वगत एटले सर्वव्यापी द्रव्य केटलां अने इयर कहेतां देशव्यापी द्रव्य, छ द्रव्यमां केटलां पामीए ते कहे छे.

षड्द्रव्यमां एक आकाशद्रव्य, सर्व लोकालोकव्यापी छे, अने पांच द्रव्यदेश व्यापी जाणवां, धर्मास्तिकाय असंख्यात प्रदेशी लोक व्यापी जाणवुं. अधर्मास्ति-

काय द्रव्य असंख्यात प्रदेशी लोकव्यापी जाणवुं. तथा कालद्रव्य गणितकाल ते अढीद्वीपव्यापी जाणवुं. तथा जीवद्रव्य पण लोकव्यापी जाणवुं. तथा पुद्गलद्रव्य पण लोक व्यापी जाणवुं. अकेक जीवने, सत्ताए अनंता कर्मरुप पुद्गल परमाणुआ स्कंध लाग्या छे. तथा तेः थकी वीजा छुटा लोकव्यापी पुद्गल परमाणुआस्कंध पण अनंता छे. ते सर्वे लोकव्यापी छे. ए रीते ए पांच द्रव्य देशव्यापी जाणवां. अने एक आकाशास्तिकाय द्रव्य, अनंत प्रदेशी, सर्वव्यापी जाणवुं. ए रीते छ द्रव्यमां सर्वव्यापी व-

जता नथी, अने एक वीजानुं कोइकोइनुं काम पण करतां नथी. जेम कोइ दुकान उपर पांच वाणोतर रहेता होय ते सर्व पोतपोतानुं कार्य फरमाव्या मुजव कर्या करे, अने सहु सहुनी मर्यादामां चाले, तेम लोकमां छ द्रव्य भेळां रह्यां छे. छ द्रव्य पोतपोतानी मर्यादामां वर्ते छे, पण निश्चयनये कोइपण वीजामां मांहेमांहे भळतां नथी, माटे अप्रवेशी जाणवां. एरीते षड् द्रव्यनुं स्वरूप वार भांभव्य जीवोए जाणवुं.

हवे एकेका द्रव्यमां आठ पक्ष कहे छे

आठ पक्षनां नाम–एक नित्य, वीजो अनित्य, त्रीजो ऐक, चोथो अनेक, पांचमो संत्, छठो असंत्, सातमो वक्तव्य, आठमो अवक्तव्य.

धर्मास्तिकायना चारगुण नित्य छे. तथा र्यायमां धर्मास्तिकायनो एक खंध नित्य छे. ाकीना देश, प्रदेश, अने अगुरु लघु, ए त्रण र्याय अनित्य छे. अधर्मास्तिकायना चार ुण, तथा एक लोकप्रमाण खंध नित्य छे. अने बाकीना त्रण पर्याय अनित्य छे. आ-काशास्तिकायना चार गुण, तथा लोकालोक प्रमाण खंध नित्य छे, अने देश, प्रदेश, तथा अगुरु लघु, ए त्रण पर्याय अनित्य छे. का-लद्रव्यना चारगुण नित्य छे अने चार प-र्याय अनित्य छे. पुद्गल द्रव्यना चार गुण नित्य छे, अने चार पर्याय अनित्य छे. जीव द्रव्यना चार गुण, अने त्रण पर्याय नित्य छे, अने एक अगुरु लघु पर्याय, अनित्य छे. ए रीते नित्यानित्य पक्ष कह्यो.

हवे षड् द्रव्यमां एक अनेक पक्ष ब
तावे छे.

एक धर्मास्तिकाय, बीजो अधर्मास्ति
काय, ए बे द्रव्यना खंध लोकाकाश प्रमा
एक छे अने गुण अनंता छे. आकाश द्रव्य
लोकाकाश प्रमाण खंध एक छे. अने गु
अनंता छे. पर्याय अनंता छे, प्रदेश अनं
छे, माटे अनेक छे. काल द्रव्यनो वर्तना
गुण एक छे, अने बीजा गुण अनंता छ
पर्याय अनंता छे, समय अनंता छे, केम
अतीतकाले अनंता समय गया, अने अन
गत काले अनंता समय आवशे, तथा वर्त
मानकाले समय एक छे माटे अनेक प
छे. पुद्गल द्रव्यना परमाणुआ अनंता छे
एक एक परमाणुमां अनंता गुणपर्याय

ां अनेकपणुं छे, अने सर्व परमाणुमां पुद्गल-
पणुं ते एकज छे. जीव द्रव्य अनंता छे, ए-
केका जीवमां प्रदेश असंख्याता छे, तथा गुण
अनंता छे. पर्याय अनंता छे ते अनेकपणुं
छे, पण जीवितव्य सर्व जीवोमां एक स-
रखुं छे, माटे एकपणुं छे.

इहां शिष्य पुछे छे के- सर्व जीव एक
सरखा छे तो मोक्षना जीव सिद्ध परमानंद
मयी देखाय छे, अने संसारी जीव कर्मवश
पड्या दुःखी देखाय छे, तेनुं केम ? तेने उ-
त्तर आपें छे, के-निश्चयनये तो सर्व जीव
सिद्ध समान छे, माटेज सर्व जीव कर्म ख-
पावी सिद्ध थाय छे, तेथी सर्व जीवनी सत्ता
एक छे, वळी शिष्य पुछे छे के जो सर्व जीव
सिद्ध समान कहो छो तो अभव्य जीव पण

सिद्ध समान छे पण कह्युं, अने तेतो मोक्षे जाता नथी, तेनुं केम ? तेने उत्तर आपे छे के अभव्य ने कर्म चीकणां छे, अने अभव्यमां, परावर्त धर्म नथी, तेथी सिद्ध थता नथी. अभव्यने कर्मनो संबंध अनादि अनंतमे भांगे छे, तेथी कोइ काले ते मोक्ष जशे नहीं. भव्य जीवमां परावर्त धर्म छे माटे कारण सामग्री मळ्याथी पलटण पामे छे अने गुणश्रेणि चढीने सिद्ध थाय छे. आत्माना आठ रुचक प्रदेश, निश्चय नयथी भव्य तथा अभव्य सर्व जीवोना सिद्ध समान छे, माटे सर्व जीवनी सत्ता एक सरखी छे. ए आठ रुचक प्रदेशने कर्म बीलकुल लागतां नथी ते आचारांगसूत्रनी श्री शिलांगाचार्य कृत टीकाना लोकविजय अ-

नमां प्रथमोद्देशके कह्युं छे.

हवे सत् तथा असत् पक्ष कहे छे. ए
व्य स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल, अने स्व-
पणे सत् एटले छता छे. अने परद्रव्य
त्र, परकाल, अने परभावपणे असत् ए-
अछतां छे. तेनी रीत बतावबाने माटे ए
द्रव्यनो द्रव्य, क्षेत्र, काल, अवे भाव,
ये छीए.

दव्वंगुणसमुदाउ
खित्तंओगाहवट्टणाकालो
गुणपज्जाय पवत्ति
भावोनिअवथ्थुधम्मोसो ॥१॥

धर्मास्तिकायनो मूल गुण चलण सहाय
णो ते स्वद्रव्य, अधर्मास्तिकायनो मूल गुण

रिशति राहागपणो ते स्वद्रव्य जाणवो. आ
काशास्तिकायनो मूल गुण अवगाहपणो ते
स्वद्रव्य, कालद्रव्यनो मूल गुण वर्तनालक्षण
पणो ते स्वद्रव्य जाणवो. तथा पुद्गल द्रव्य
नो मूलगुण पूरण गलनपणो ते स्वद्रव्य जा
णवो. जीव द्रव्यनो मूल गुण ज्ञानादिकचे
तना लक्षणपणो ते स्वद्रव्य, ए छ द्रव्यना
स्वद्रव्यपणो कह्यो.

हवे षड् द्रव्यनो स्वक्षेत्र कहे छे-धर्मा
स्तिकाय अने अधर्मास्तिकायनो स्वक्षेत्र असं
ख्यात प्रदेशमय जाणवो. आकाश द्रव्यनो
स्वक्षेत्र अनंत प्रदेशमय जाणवो. काल द्र
व्यनो स्वक्षेत्र समयरुप छे. पुद्गल द्रव्यनो
स्वक्षेत्र एक परमाणु छे. परमाणुआ अनंता
छे. जीव द्रव्यनो स्वक्षेत्र एक जीवना असं

ख्याता प्रदेश छे.

हवे स्वकाल ते षड्‌द्रव्यमां अगुरु लघु-नो छे. छए द्रव्यना पोत पोताना गुण पर्याय ते सर्व द्रव्यनो स्वभाव जाणवो. सारांशके धर्मास्तिकायमां पोतानाज द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव छे, पण बीजा पांच द्रव्यना नथी. तथा अधर्मास्तिकायमां पण पोताना ज स्वद्रव्य, क्षेत्रकाल, भाव छे पण बीजा पांच द्रव्यना नथी. आकाशास्ति कायमां आकाशना ज स्वद्रव्यादिक चार छे, पण बीजा पांच द्रव्यना नथी. तथा काल द्रव्यमां कालना स्वद्रव्यादिक चार छे, पण बीजा पांच द्रव्यना नथी. पुद्‌गल द्रव्यना स्वद्रव्यादि चार पुद्‌गल द्रव्यमां छे, पण बीजा पांच द्रव्यना नथी. तथा जीव द्रव्यना स्वद्रव्यादिक चार ते जीव द्र-

स्थिति सहायपणो ते स्वद्रव्य जाणवो. आकाशास्तिकायनो मूल गुण अवगाहपणो ते स्वद्रव्य, कालद्रव्यनो मूल गुण वर्तना लक्षण पणो ते स्वद्रव्य जाणवो. तथा पुद्गल द्रव्यनो मूलगुण पूरण गलनपणो ते स्वद्रव्य जाणवो. जीव द्रव्यनो मूल गुण ज्ञानादिक चेतना लक्षणपणो ते स्वद्रव्य, ए छ द्रव्यनो स्वद्रव्यपणो कह्यो.

हवे षड् द्रव्यनो स्वक्षेत्र कहे छे-धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकायनो स्वक्षेत्र असंख्यात प्रदेशमय जाणवो. आकाश द्रव्यनो स्वक्षेत्र अनंत प्रदेशमय जाणवो. काल द्रव्यनो स्वक्षेत्र समयरुप छे. पुद्गल द्रव्यनो स्वक्षेत्र एक परमाणु छे. परमाणुआ अनंता छे. जीव द्रव्यनो स्वक्षेत्र एक जीवना असं-

त्मपां छे, पण बीजा पांच द्रव्यना नयं "गुणपर्यायवद्द्रव्यम्" द्रव्यथी अभेद गुणपर्याय होय तेने द्रव्य कहे छे तथा स्व धर्मनो आधारवंतपणो तेने क्षेत्र कहे छे, अं उत्पाद व्ययनी वर्तना तेने काल कहे छे तथा विशेष गुण परिणति, स्वभाव परि णति, पर्याय प्रमुख ते स्वभाव कहीए.

अत्र एक-भेद स्वभाव, बीजो-अ स्वभाव, त्रीजो-भव्य स्वभाव चोथो-अ व्य स्वभाव अने पांचमो-परम स्वभाव, पांच स्वभाव जाणवा. तेमां द्रव्यना सर्व मेने पोतपोताना स्व स्व कार्य करवेकरी स्वभाव छे, अने अवस्थानपणे अभेद स भाव छे. अणपलटण स्वभावे अभव्य स भाव छे. तथा पलटण स्वभावे भव्य स्वभ

ज्ञमां गुंग्यो तेना भगंक्गातमा भागे हाल आ-
गम रह्यां छे. ए छ द्रव्यमां आठ पक्ष कह्या.

हवे नित्य तथा अनित्य पक्षथी चतुर्भं-
गी उपनी ते बतावे छे. जेनी आदि नथी
अने अंत नथी ते अनादि अनंत पहेलो भां-
गो जाणवो. तथा जेनी आदि नथी पण
अंत छे, ते अनादि सांत बीजो भांगो जा-
णवो. तथा जेनी आदि पण छे अने अंत
पण छे, ते सादि सांत त्रीजो भांगो जाणवो.
वळी जेनी आदि छे, पण अंत नथी, ते सादि
अनंत नामे चोथो भांगो जाणवो.

हवे ए चार भांगा द्रव्योमां केवी रीते
उतरे छे, ते बतावे छे.

जीव द्रव्यमां ज्ञानादिक गुण ते अनादि
अनंत छे, नित्य छे. भव्य जीवने कर्म सां-



१ जीवने मनुष्यपणुं तथा सिद्धपणुं क-हेवुं ते द्रव्यपर्याय.

२ जे द्रव्यना प्रदेशनुं मान ते द्रव्य व्यंजनपर्याय.

३ एक गुणथी अनेकता थाय. जेम ध-र्माधर्मादि द्रव्य पोताना चलण सहकारादि गुणथी अनेक जीव तथा पुद्गलने सहाय करे तेने गुणपर्याय नय कहे छे.

४ एक गुणना घणा भेद ते गुण व्यं-जनपर्याय कहीए.

५ स्वभाव पर्याय ते अगुरु लघु पर्या-यथी जाणवो. ए पांच पर्यायो सर्व द्रव्य-मां छे.

६ विभाव पर्याय ते जीव पुद्गल ए

वे द्रव्यमां छे. जीव जे चार गतिना नवा नवा भव करे ते जीवमां विभाव पर्याय तथा पुद्गलमां खंधपणु ते विभावपर्याय जाणवो.

हवे पर्यायना बीजा छ भेद कहे छे— एक अनादि नित्य पर्याय, ते पुद्गल द्रव्यनों मेरु प्रमुख. बीजो सादि नित्य पर्याय ते जीव द्रव्यनी सिद्धावस्था सिद्धावगाहनादिक.

त्रीजो अनित्य पर्याय ते समय समयमां द्रव्य उपजे विणसे छे ते. "सादिसांत पर्याया भव शरीराध्यवसायादयः" इति नयचक्रे. चोथो अशुद्ध अनित्य पर्याय ते जन्म मरण थाय छे, ते वडे कहेवो. पांचमो उपाधि पर्याय ते कर्म संबंध. छठो शुद्ध पर्याय जे मूळपर्याय, सर्व द्रव्यना एक सरखा छे ते एवं पर्यायार्थिकनुं स्वरुप कह्युं. नय

१ जीवने भव्यपणुं तथा सिद्धपणुं हेवुं ते द्रव्यपर्याय.

२ जे द्रव्यना प्रदेशनुं मान ते द्रव्य व्यंजनपर्याय.

३ एक गुणथी अनेकता थाय. जेम धर्माधर्मादि द्रव्य पोताना चलण सहकारादि गुणथी अनेक जीव तथा पुद्गलने सहाय करे तेने गुणपर्याय नय कहे छे.

४ एक गुणना घणा भेद ते गुण व्यंजनपर्याय कहीए.

५ स्वभाव पर्याय ते अगुरु लघु पर्यायथी जाणवो. ए पांच पर्यायो सर्व द्रव्यमां छे.

६ विभाव पर्याय ते जीव पुद्गल ए

वे द्रव्यमां छे. जीव जे चार गतिना नवा नवा भव करे ते जीवमां विभाव पर्याय तथा पुद्गलमां स्वंधपणु ते विभावपर्याय जाणवो.

हवे पर्यायना वीजा छ भेद कहे छे— एक अनादि नित्य पर्याय, ते पुद्गल द्रव्यनो मेरु प्रमुख. वीजो सादि नित्य पर्याय ते जीव द्रव्यनी सिद्धावस्था सिद्धावगाहनादिक.

त्रीजो अनित्य पर्याय ते समय समयमां द्रव्य उपजे विणसे छे ते. "सादिसांत पर्याया भव शरीराध्यवसायादयः" इति नयचक्रे. चोथो अशुद्ध अनित्य पर्याय ते जन्म मरण थाय छे, ते वडे कहेवो. पांचमो उपाधि पर्याय ते कर्म संवंध. छट्टो शुद्ध पर्याय जे मूल पर्याय, सर्व द्रव्यना एक सरखा छे ते एवं पर्यायार्थिकनुं स्वरुप कह्युं. नय

१ जीवने भव्यपणुं तथा सिद्धपणुं कहेवुं ते द्रव्यपर्याय.

२ जे द्रव्यना प्रदेशनुं मान ते द्रव्य व्यंजनपर्याय.

३ एक गुणथी अनेकता थाय. जेम धर्माधर्मादि द्रव्य पोताना चलण सहकारादि गुणथी अनेक जीव तथा पुद्‌गलने सहाय करे तेने गुणपर्याय नय कहे छे.

४ एक गुणना घणा भेद ते गुण व्यंजनपर्याय कहीए.

५ स्वभाव पर्याय ते अगुरु लघु पर्यायथी जाणवो. ए पांच पर्यायो सर्व द्रव्यमां छे.

६ विभाव पर्याय ते जीव पुद्‌गल ए

वे द्रव्यमां छे. जीव जे चार गतिना न
नवा भव करे ते जीवमां विभाव पर्याय त
पुद्गलमां खंधपणु ते विभावपर्याय जाणवे

हवे पर्यायना बीजा छ भेद कहे छे
एक अनादि नित्य पर्याय, ते पुद्गल द्र
नो मेरु प्रमुख. बीजो सादि नित्य पर्याय
जीव द्रव्यनी सिद्धावस्था सिद्धावगाहनादि

त्रीजो अनित्य पर्याय ते समय सम
मां द्रव्य उपजे विणसे छे ते. "सादिस
त पर्याया भव शरीराध्यवसायादयः" इ
नयचक्रे. चोथो अशुद्ध अनित्य पर्याय
जन्म मरण थाय छे, ते वडे कहेवो. पांच
उपाधि पर्याय ते कर्म संबंध. छठो श
पर्याय जे मूल पर्याय, सर्व द्रव्यना एक स
खा छे ते एवं पर्यायार्थिकनुं स्वरुप कह्युं.

१ जीवने अरूपीपणुं तथा सिद्धपणुं क-
हेवुं ते द्रव्यपर्याय.

२ जे द्रव्यना प्रदेशनुं मान ते द्रव्य
व्यंजनपर्याय.

३ एक गुणथी अनेकता थाय. जेम ध-
र्मास्तिकायादि द्रव्य पोताना चलण सहकारादि
गुणथी अनेक जीव तथा पुद्गलने सहाय
करे तेने गुणपर्याय नय कहे छे.

४ एक गुणना घणा भेद ते गुण व्यं-
जनपर्याय कहीए.

५ स्वभाव पर्याय ते अगुरु लघु पर्या-
यथी जाणवो. ए पांच पर्यायो सर्व द्रव्य-
मां छे.

६ विभाव पर्याय ते जीव पुद्गल ए

वे द्रव्यमां छे. जीव जे चार गतिना नवा नवा भव करे ते जीवमां विभाव पर्याय तथा पुद्गलमां खंधपणु ते विभावपर्याय जाणवो.

हवे पर्यायना बीजा छ भेद कहे छे– एक अनादि नित्य पर्याय, ते पुद्गल द्रव्यनो मेरु प्रमुख. बीजो सादि नित्य पर्याय ते जीव द्रव्यनी सिद्धावस्था सिद्धावगाहनादिक.

त्रीजो अनित्य पर्याय ते समय समयमां द्रव्य उपजे विणसे छे ते. "सादिसांत पर्याया भव शरीराध्यवसायादयः" इति नयचक्रे. चोथो अशुद्ध अनित्य पर्याय ते जन्म मरण थाय छे, ते वडे कहेवो. पांचमो उपाधि पर्याय ते कर्म संबंध. छट्ठो शुद्ध पर्याय जे मूल पर्याय, सर्व द्रव्यना एक सरखा छे ते एवं पर्यायार्थिकनुं स्वरूप कह्युं. नय

ोनुं निर्वाण थयां घणो काळ गयो छे, पण
ाज दीवालीना दीवसे वीरनिर्वाण छे,
्म जे कहेवुं ते वर्तमानकालमां अतीत
ालनो आरोप कर्यो जाणवो. तथा आज
ी पद्मनाभ प्रभुनो निर्वाण छे, एम जे कहेवुं
वर्तमान काळमां अनागतकालनो आरोप.
्वी रीते अतीतना बे भेद छे. तथा अना-
ातना बे भेद छे तथा वर्तमानना पण बे
ेद छे ते सर्व मळी कालारोपना छ भेद
ाणवा. चोथो वळी कारणविषे कार्यनो
आरोप करवो ते कारणाद्यारोप जाणवो.

ते कारण चार छे. १ उपादान कारण.
२ निमित्त कारण. ३ असाधारण कारण.
४ अपेक्षा कारण. तेमां बाह्यद्रव्य क्रिया ते
साध्य सापेक्षवाळाने धर्मनुं निमित्त कारण

(२) संग्रहनय.

सामान्यवस्तुसत्ता संग्राहक संग्रहःस-द्विविधः सामान्य संग्रहः विशेषसंग्रहश्च सा-मान्य संग्रहो द्विविधः मूलतऊत्तरतश्च मूलतोऽस्तित्वादिभेदतः षड्विध उत्तरतो जाति समुदायभेदरूपः जातितः गवि गोत्वं, घटे घटत्वं, वनस्पतौ वनस्पतित्वं, समुदायतो सहकारात्मके वने सहकारवनं, मनुष्यसमूहे मनुष्य वृंद, इत्यादि समुदायरुपः अथवा द्रव्यमिति सामान्य संग्रहः जीव इति विशेष संग्रहः

अर्थः सामान्ये करी मूल सर्व द्रव्य व्यापक नित्यत्वादिक सत्तापणे रह्या जे धर्म तेनो जे संग्रह करे तेने संग्रहनय कहे छे.

तेना बे भेद छे. १ एक सामान्य संग्रह २ बीजो विशेष संग्रह.

दृष्टांत—जेम कोइक मनुष्ये प्रभाते दातण करवाने अर्थे पोताना घरना बारणे बेशीने चाकरने कह्युं के दातण लेइ आवो ! तेवारे चाकर पुरुष, पाणीनो लोटो, रुमाल, दातण एम सर्व चीज लइ आव्यो. शेठे तो एक दातण नाम लइने मंगाव्युं हतुं पण सर्वनो संग्रह करी चाकर लइ आव्यो ते रीते संग्रहनय जाणवो.

(३) व्यवहारनय.

संग्रहग्रहीतवस्तु भेदांतरेण विभजनं व्यवहरणं, प्रवर्तनं वा व्यवहारः सद्विविधः शुद्धोऽशुद्धश्च ॥

संग्रहनये ग्रहीत जे वस्तु तेने भेदांतरे वेहेचवुं, तेने व्यवहारनय कहे छे. जेम द्रव्य

दृष्टांत—जेम कोइक मनुष्ये प्रभाते दातण करवाने अर्थे पोताना घरना वारणे वेशीने चाकरने कह्युं के दातण लेइ आवो ! तेवारे चाकर पुरुष, पाणीनो लोटो, रुमाल, दातण एम सर्व चीज लइ आव्यो. शेठे तो एक दातण नाम लइने मंगाव्युं हतुं पण सर्वेनो संग्रह करी चाकर लइ आव्यो ते रीते संग्रहनय जाणवो.

(३) व्यवहारनय.

संग्रहग्रहीतवस्तु भेदांतरेण विभजनं व्यवहरणं, प्रवर्तनं वा व्यवहारः. सद्विविधः शुद्धोऽशुद्धश्च ॥

संग्रहनये ग्रहीत जे वस्तु तेने भेदांतरे वेहेचवुं, तेने व्यवहारनय कहे छे. जेम द्रव्य

सर्व द्रव्यनी स्वरुप शुद्ध प्रवृत्ति—जेम धर्मास्तिकायनी चलण सहायता तथा अधर्मास्तिकायनी स्थिति सहायता तथा जीवनी ज्ञायकता इत्यादिकने वस्तुगत शुद्ध व्यवहार कहीए.

द्रव्यनो उत्सर्ग नीपजवा माटे जे रत्नत्रयिनी शुद्धता गुणस्थाने श्रेणि आरोहणरुप ते साधन शुद्ध व्यवहार कहीए.

अशुद्ध व्यवहारना वे भेद छे. १ सद्भूत व्यवहार २ असद्भूत व्यवहार. तेमां जे क्षेत्रे अवस्थाने अभेदे रह्या जे ज्ञानादिगुण तेने परस्पर भेदे कहेवा ते सद्भूत व्यवहार. तथा हुं क्रोधी छुं, हुं मानी छुं, अथवा देवता छुं, मनुष्य छुं, इत्यादि देवतापणे ते हेतुपणे परिणमतां ग्रह्यां जे देवगति विपाकी

१ वहेंचणरूप व्यवहार.

२ प्रवृत्तिरूप व्यवहार.

प्रवृति व्यवहारना त्रण भेद छे. वस्तु-
प्रवृत्ति, साधनप्रवृत्ति, लौकिकप्रवृत्ति. तेमां
साधन प्रवृत्तिना त्रण भेद छे.

१ जे अरिहंतनी आज्ञाये शुद्ध साधन
मार्गे इह लोक संसार पुद्गल भोग आसं-
सादिदोप रहीत जे रत्नत्रयिनी परिणति,
परभव त्याग सहित ते लोकोत्तर साधन प्र-
वृत्ति नामे पेहेलो भेद जाणवो.

२ स्याद्वाद विना मिथ्याभिनिवेप स-
हित साधन प्रवृत्ति ते दुःप्रावचनिक साधन
प्रवृत्ति.

३ लोकना स्व स्वदेश कुलनी चाले
प्रवृत्ति ते लोक व्यवहार प्रवृत्ति ए त्रण प्र-

तेने भगवती सूत्रमां अव्रती तथा अपच्च-खाणी कह्या छे. आ कथन जे बाह्यभावमां राचे छे अने आत्मस्वरूप जाणवा खप करता नथी तेने फटका तरीके छे. एकांत जिनवचन नथी. दान, पूजा, तप अने क्रिया प्रमुख सापेक्षबुद्धिथी मोक्षनुं कारण छे. कारणे कार्य नीपजे इति वचनात्. ॥

आत्मानुं स्वरूप ओळखवाने बहु उद्यम करवो. मुनिपणुं आत्मानुं स्वरूप जाणवाथी थाय छे. जेम जेम आत्मानुं स्वरूप ग्रहाय छे, तेम तेम परभावनो त्याग थाय छे. श्री उत्तराध्ययन सूत्रमां कह्युं छे के " **न-मुणीरन्नवासेणं** " जंगलमां वसवाथी कंइ मुनिपणुं प्राप्त थतुं नथी, पण " **नाणे-**

समये द्रव्यमां छे. जे समयमां शुद्ध स्वगुणनी अस्ति छे तेज समयमां परगुणनी नास्ति पण छे. यस्मिन् समये शुद्ध स्वगुणस्य अस्तिता आत्मनि तस्मिन् समये एव परगुणस्य नास्तिता आत्मनि वोध्या. माटे अस्ति नास्ति ए वे भांगा एक समयमां भेळा छे ते स्यात्‌अस्तिनास्ति त्रीजो भांगो थयो.

४ स्यात्‌अव्यक्तव्य. अस्ति अने नास्ति ए वेउ भांगा एक समयमां छे, तो वचने करी अस्ति एटलुं वोलतां असंख्याता समय लागे, तेथी नास्ति भांगो तेज वखते कहेवाय नहीं, अने जो नास्ति भांगो कह्यो तो अस्तिपणो आव्यो, माटे एकज अस्ति कहेतां थकां नास्तित्व तेज स-

मये द्रव्यमां छे, ते कहेवाणो नहीं. माटे मृषावाद लागे, तेमज नास्ति कहेतां अस्तिनो मृषावाद लागे, माटे वचने करी अगोचर छे. एक समयमां वे भांगा वचने करी कह्या जाय नहीं. कारण के एक अक्षर वोलतां असंख्याता समय लागे छे. माटे वचनथी अगोचर छे, ते स्यात् अवक्तव्य चोथो भांगो जाणवो.

५ अवक्तव्यपणो वस्तुमां अस्तित्व-नो पण छे. माटे **स्यात् अस्ति अवक्तव्य** ए पांचमो भांगो जाणवो.

६ नास्तित्वनो पण अवक्तव्य पणो वस्तु मध्ये छे माटे **स्यात् नास्ति अवक्तव्य** ए छट्ठो भांगो जाणवो.

मां बीजा समयमां अनंत परमाणुआ तथा अनंतजीव प्रदेशने चलणसहायपणो थयो. त्यारे असंख्याता चलणसहायनो व्यय, अने अनंता चलणसहायनो उपजवो, अने चलणसहाय गुणपणे ध्रुव एम धर्म द्रव्यमध्ये उत्पाद, व्यय, अने ध्रुवपणो. थइ रह्यो छे. ते प्रमाणे अधर्म, आकाशादि द्रव्यमां जाणवुं. तथा वली कार्य कारणपणे उत्पाद, व्यय तथा अगुरु लघुपर्यायना चलननो उत्पाद, व्यय, पंचास्तिकायमां कहेवो. तथा कालद्रव्य ते उपचारथी द्रव्य छे. तेनुं सर्व स्वरूप उपचारथीज कहेवुं. ए रीते सर्व द्रव्यमां सत्पणो छे. जो अगुरु लघुनो भेद न थाय, तो प्रदेशोनो मांहोमांहे भेद थाय नहीं. माटे अगुरु लघुनो भेद सर्वमां छे.

पण हिंसात्मक छे, मांसाहार अने मद्यपान-ना पापथी दुःख छे. अहो!!! जो धर्म-मार्गथी पाछा पगार करशो, तो नरका भ्र-मटकशो. अनेक दुःखमांथी छुटवानो आ उत्तम अवसर छे, एम ज्ञानीओ पुस्तक द्वारा जणावे छे.

आर्तध्याननां परिणाम पांचमा तथा छठ्ठा गुणठाणा सुधी होय छे. कारण के छठ्ठं गुणठाणुं प्रमत्त छे, माटे त्यां ए ध्या-नना परिणाम संभवे छे.

२ रौद्र ध्यान.

१ हिंसानुबंधीरौद्रध्यान २ मृषानुबंधी-रौद्रध्यान ३ अदत्तानुबंधीरौद्रध्यान ४ परि-ग्रहानुबंधीरौद्रध्यान.

२ शरीरमां रह्यो जे आपणो जीव तेमां अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, अने साधुपणाना सर्व गुण छे एहवुं जे ध्यान ते पिंडस्थ ध्यान कहीए. अथवा गुणीना गुणमध्ये एकत्वता उपयोग करवो ते पिंडस्थ ध्यान जाणवुं.

३ शरीरकर्मादि रूपमां रह्यो थको पण मारो आत्मा अरुपी अनंतगुणी छे, शरीरमां रहेला आत्मामां ध्यान वडे तल्लीन थवुं. ब्रह्मरन्ध्रादि स्थानोमां ध्यान धरवुं, तेने पिंडस्थध्यान कहे छे. ए त्रण ध्यान धर्म ध्यानमां गणवां.

४ रूपातीत, निराकार, निःसंगी, निर्मल, संकल्प विकल्प रहित, अभेद, एक, शुद्ध, सत्तारूप, चिदानन्द, अ...

घन कीधा पछी शेष तेर प्रकृति खपावे. अ-
कर्मी थाय, सर्व क्रियाथी रहित थाय ते स-
मुच्छिन्न क्रियानिवृत्ति शुक्लध्यान जाणवुं.
ए ध्यान ध्यावतां शेष कर्मप्रकृति दलखरण-
रूप क्रिया उच्छेदे. अवगाहना, देहमानमांथी
त्रीजो भाग घटाडे, शरीरनो त्याग करी
अहींथी सातराज ऊपर लोकने अंते जइ
सिद्ध थाय.

हवे बीजां चार ध्यान कहे छे. (१) पदस्थ (२) पिंडस्थ (३) रूपस्थ (४) रूपातीत.

१ अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने साधु ए पंचपरमेष्ठीना गुणने संभारे, तेनुं हृदयमां ध्यान करे ते पदस्थ ध्यान जाणवुं.

२ शरीरमां रह्यो जे आपणो जीव तेमां अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, अने साधुपणाना सर्व गुण छे एहवुं जे ध्यान ते पिंडस्थ ध्यान कहीए. अथवा गुणीना गुणमध्ये एकत्वता उपयोग करवो ते पिंडस्थ ध्यान जाणवुं.

३ शरीरकर्मादि रूपमां रह्यो थको पण मारो आत्मा अरूपी अनंतगुणी छे, शरीरमां रहेला आत्मामां ध्यान वडे तल्लीन थवुं. ब्रह्मरन्ध्रादि स्थानोमां ध्यान धरवुं, तेने पिंडस्थध्यान कहे छे. ए त्रण ध्यान धर्म ध्यानमां गणवां.

४ रूपातीत, निराकार, निःसंगी, निर्मल, संकल्प विकल्प रहित, अभेद, एक, शुद्ध, सत्तारूप, चिदानन्द, असङ्ग, अखंड,

पन कीधा पछी शेष तेर प्रकृति खपावे. अ-
कर्मी थाय, सर्व क्रियाथी रहित थाय ते स-
मुच्छिन्न क्रियानिवृत्ति शुक्लध्यान जाणवुं.
ए ध्यान ध्यावतां शेष कर्मप्रकृति दलक्षरण-
रूप क्रिया उच्छेदे. अवगाहना, देहमानमांथी
त्रीजो भाग घटाडे, शरीरनो त्याग करी
अहींथी सातराज ऊपर लोकने अंते जइ
सिद्ध थाय.

हवे बीजां चार ध्यान कहे छे. (१) पदस्थ (२) पिंडस्थ (३) रूपस्थ (४) रूपातीत.

१ अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने साधु ए पंचपरमेष्ठीना गुणने संभारे, तेनुं हृदयमां ध्यान करे ते पदस्थ ध्यान जाणवुं.

[illegible] । पद्मोत्तमर्गा

[illegible] श्रीपूणमन्द-

[illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मिथ्यात्वने पामे छे. उक्तं च कल्पभाष्ये-आलंवण मलहंती, जहसठाणं न मुंचए इलिआ, एवंअकयति पुंजी । मिच्छंचिअउवसमीपइ ॥ मिच्छत्तंजमुइन्नं, तंखीणंअणुइअं-चउवसंतं । मीसीभावपरिणयं । वेइज्जंतं खओवसमं ॥ तच्च सत्कर्मवेदकमप्युच्यते, औपशमिककंतुसत्कर्मवेदनारहिमित्यौपशमिकक्षायोपशमिकयोर्भेदः ॥

सास्वादन सम्यक्त्व-अनंतानुबंधी कषायना उदये उपशम समकित वमतां मिथ्यात्व गुणस्थानक पाम्या पहेलां आंतरे

क्षयोपशमसम्यक्त्व = अनंतानुबंधीनी चोकडी, मिथ्यात्त्वमोहनीय, मिश्रमोहनीय अने समकितमोहनीय ए सात प्रकृतिनो प्रदेशोदय अने समकित मोहनीयनो प्रदेशोदय अने रसोदय जेमां होय तेने क्षयोपशम सम्यक्त्व कहे छे.

कम्मगंथेसुधुवं । पढमोवसमी करेइ तिपुंजं ! तव्वडीओपुणगच्छइ । सम्मे मिसंमि मिच्छेवा ॥

उपशम सम्यक्त्वथी च्युत थतां जो जीव सम्यक्त्व मोहनीयने पामे छे तो तेने क्षयोपशम सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे. कर्मग्रन्थना मत प्रमाणे एम जाणवुं. सिद्धांतना मत प्रमाणे औपशमिक सम्यक्त्वथी च्युत अवश्य

जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट छ आवली-
का सुधी क्षीर वमन स्वाद सरखो जे भाव
रहे छे तेने सास्वादन सम्यक्त्व कहे छे.

सास्वादनं च पूर्वोक्तौपशमिक सम्यक्त्वात् यततो जघन्यतः समय उत्कर्षतश्च षडावलिकायामवशिष्टायामनन्तानुबन्ध्युदयात्तद्मनेतदास्वादरूपं यतः ॥ उवसम सम्मत्ताओ चयओमिच्छं अपावमाणस्स सासायणसम्मत्तं तयंतरालं मि छावलियं ॥

वेदक सम्यक्त्व–अनंतानुबंधीनी चोकडी मिथ्यात्व मोहनीय मिश्रमोहनीयने तद·

क्षय करी सातमा गुणस्थानकमां मग-
तमोहनीनो छेल्लो ग्रास (भाग) भोगवे
, उपजे छे तेने वेदकसम्यक्त्व कहे छे.

क्षपकश्रेणिं प्रपन्नस्य चतुरन-
तानुबन्धिषु मिथ्यात्वमिश्रपुञ्ज-
ये च क्षपितेषु सत्सु क्षप्यमाणे
म्यक्त्वपुञ्जे तत्सम्यक्त्वचरम
पणोद्यतस्य तच्चरमपुद्गलवेदन
रूपम् ॥

क्षपकश्रेणि अंगीकार करेलाने अनन्ता
नुबंधी चार कषाय मिथ्यात्व अने मिश्र
ए छ प्रकृति क्षय करे छते अने सम्यक्त
मोहनीय पुंज क्षप्यमाण करे छते सम्यक्

ष्टिः सादिपर्यवसानेति या त्वपायस-
हचारिणी श्रेणिकादेरिव सम्यग्दृ-
ष्टिः तदशुद्धं क्षायिकं तस्य च सा-
दिसपर्यवसानत्वादस्ति प्रतिपातो य-
दुक्तं गंधहस्तिना तत्र या च अपाय
सद्द्रव्यवर्तिनी अपायो मतिज्ञानांशः
सद्द्रव्याणि शुद्धसम्यक्त्वदालिका-
नि तद्वर्तिनी श्रेणिकादीनां च सद्द्र-
व्यापगमे भवत्यपायसहचारिणी
सा सादिः सपर्यवसाना चेति केवल-
ज्ञानोत्पत्तौ अपायक्षये अपायः म-
तिज्ञानांशः तत्क्षयेऽसौ भवति न

प्रथमकषायोदये तत्काले तदुदया-
भावात् तत्क्षये एव तस्योपपत्तिरि-
त्यलं प्रसङ्गेन इति शुद्धाशुद्धं क्षा-
यिकं द्विभेदं.

श्रीकृष्ण श्रेणिक वगेरेने क्षायिक सम्यक्त्व
हतुं. तेमने चारित्रनी क्रियाओपर अत्यंत राग
होवाथी रोचक समकित पण कहेवाय छे.

खीणे दंसणमोहे-तिविहंमि विभव-
निआणभूअंमि
निपच्चवायमउलं-सम्मत्तं खाइयं
होइ ॥१।

कारक सम्यक्त्व—तत्रकारकं सू-

आज्ञा शुद्धा क्रियैव, तस्या एव प-
रगतसम्यक्त्वोत्पादकत्वेन सम्य-
क्त्वरूपत्वात् तदवच्छिन्नं वा सम्य-
क्त्वं कारकसम्यक्त्वं। एतच्च विशु-
द्धचारित्रिणामेव ॥१॥

सूत्राज्ञा शुद्धक्रिया तेज कारक स-
म्यक्त्व छे ते क्रियानेज परगत सम्यक्त्वो-
त्पादकपणावडे सम्यक्रूपत्व छे, ए हेतु
थकी तदवच्छिन्नसम्यक्त्वने कारकसम्य-
क्त्व कहे छे. विशुद्ध चारित्रवंतोने कारकस-
म्यक्त्व होय छे.

रोचक सम्यक्त्व—रोचयति स-

म्यगनुष्ठानप्रवृत्तिं, नतु कारयतीति रोचकम्, अविरतसम्यग्दृशां कृष्णश्रेणिकादीनां ॥१॥

सम्यक् अनुष्ठाननी प्रवृत्तिनी रुचि करावे पण चारित्रनी प्रवृत्ति करावी शके नहि तेने रोचक सम्यक्त्व कहे छे देशविरत्यादि धर्मनी क्रियाओ रुचे पण ते करी शकाय नहि कृष्ण श्रेणिकादिकनी पेठे.

दीपक सम्यक्त्व—दीपकं व्यञ्जकमित्यनर्थान्तरम्, एतच्च यः स्वयं मिथ्यादृष्टिरपि परेभ्यो जीवाजीवादिपदार्थान् यथावस्थितान् व्यन-
— नस्याङ्गारमर्द्दकादेर्द्रष्टव्यम् ॥१॥

त्राज्ञा शुद्धा क्रियैव, तस्या एव परगतसम्यक्त्वोत्पादकत्वेन सम्यक्त्वरूपत्वात् तदवच्छिन्नं वा सम्यक्त्वं कारकसम्यक्त्वं। एतच्च विशुद्धचारित्रिणामेव ॥१॥

सूत्राज्ञा शुद्धक्रिया तेज कारक सम्यक्त्व छे ते क्रियानिज परगत सम्यक्त्वोत्पादकपणावडे सम्यक्रूपत्व छे, ए हेतु थकी तदवच्छिन्नसम्यक्त्वने कारकसम्यक्त्व कहे छे. विशुद्ध चारित्रवंतोने कारकसम्यक्त्व होय छे.

रोचक सम्यक्त्व—रोचयति स-

पाणे तेओ निश्चयसम्यक्त्वनी व्याख्या
करे छे पण तेनो प्रवचनसारोद्धारवृत्ति–नव-
द प्रकरणवृत्ति–धर्मसंग्रहवृत्ति–आचारांगसूत्र
का वगेरेमां कथेला निश्चय सम्यक्त्वनी
ाथे मतभेद देखाय छे. नवपदप्रकरणवृत्ति,
र्मसंग्रह वगेरेमां क्षायिक समकितने निश्चय
मकितथी भिन्न गण्युं छे अने श्रेणिकने क्षा-
यक सम्यक्त्व छतां निश्चय सम्यक्त्व नथी
म स्पष्ट कथ्युं छे. आगमसारना कर्त्तानी
 निश्चय सम्यक्त्वनी व्याख्या करी छे ते
ण उपरनी व्याख्याथी भिन्न पडे छे तो
ण अनुभवनी अपेक्षाए अप्रमत्त साधुओने
े निश्चय सम्यक्त्व कथ्युं छे तेनी साथे सं-
ंध कथंचित् वंधवेसतो आवे छे. अप्रमत्त
साधुओ, निश्चयनयनी अपेक्षाए पोताना आ-

आ प्रमाणे निश्चयनय सम्यक्त्वनुं स्वरूप अवबोधवुं. शुद्ध ज्ञान दर्शन चारित्र परिणति रूप आत्मा तेज निश्चय सम्यक्त्व छे. बाह्य रागादि संकल्प विकल्प रहित निरुपाधिमय शुद्धात्म बोध स्थिरता, लीनता तन्मय परिणति तेज निश्चय सम्यक्त्व अवबोधवुं.

आगमसारकर्ता देव–गुरु अने धर्मनी श्रद्धाने व्यवहारसम्यक्त्व कहे छे अने आत्मा तेज देव, आतमा तेज गुरु अने आत्मा तेज धर्म एवी श्रद्धाने निश्चयनय सम्यक्त्व कथे छे. प्रश्नोत्तररत्नचिंतामणिमां शेठ अनुपचंद मलुकचंद जणावे छे के उपशम सम्यक्त्व–क्षयोपशम सम्यक्त्व अने क्षायिक सम्यक्त्व तेज निश्चय सम्यक्त्व छे. आ प्र-

तेमां निश्चयसम्यक्त्वनी व्याख्या
छे पण तेनो प्रवचनसारोद्धारवृत्ति–नव-
करणवृत्ति–धर्मसंग्रहवृत्ति–आचारांगसूत्र
वगेरेमां करेला निश्चय सम्यक्त्वनी
मतभेद देखाय छे. नवपदप्रकरणवृत्ति,
ग्रह वगेरेमां क्षायिक समकितने निश्चय
कितथी भिन्न गण्युं छे अने श्रेणिकने क्षा-
सम्यक्त्व छतां निश्चय सम्यक्त्व नथी
स्पष्ट कह्युं छे. आगमसारना कर्त्तानी
निश्चय सम्यक्त्वनी व्याख्या करी छे ते
उपरनी व्याख्याथी भिन्न पडे छे तो
अनुभवनी अपेक्षाए अप्रमत्त साधुओने
निश्चय सम्यक्त्व कह्युं छे तेनी साथे सं-
र कथंचित् बंधबेसतो आवे छे. अप्रमत्त
ाधुओ, निश्चयनयनी अपेक्षाए पोताना आ-

न्द्रिय तिर्यंच जीवों अने उपर्युक्त त्रण प्रकारना देवताओने पारभविक क्षायिक सम्यक्त्व पण होतुं नथी. कारणके क्षायिक सम्यक्त्वदृष्टिनो तेओमां उत्पाद थतो नथी. उपर्युक्त संख्यातायुष्कसंज्ञिपंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवों तथा त्रण प्रकारना देवताओने उपशम अने क्षयोपशम सम्यक्त्व थाय छे. एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय अने असंज्ञिपञ्चेन्द्रिय जीवोने ते भव वा परभवनी अपेक्षाए त्रण सम्यक्त्वमांथी एक पण सम्यक्त्व होतुं नथी. बादर, पृथ्वी, जल, वनस्पति, द्वित्रिचतुरिन्द्रिय जीवो अने असंज्ञिपंचेन्द्रियोमां पर्याप्तावस्थामां पारभविक सास्वादन सम्यक्त्व अने पर्याप्त संज्ञी पंचेन्द्रियमां तादृभविक पमाय

छे. सूक्ष्म एकेन्द्रिय बादर तेज वायुमां सम्यक्त्वलेश्यावंतोना उत्पादनो अभाव छे माटे सास्वादन तेओमां नथी ए कार्मग्रन्थिक अभिप्राय छे. सूत्राभिप्रायवडे तो पृथिवी आदि एकेन्द्रियोने सास्वादन सम्यक्त्व नथी. यदुक्तं प्रज्ञापनायाम्, पुढविकाइयाणं पुच्छा गोयमा पुढविकाइया नो सम्मदिट्ठी नो सम्मामिच्छदिट्ठी एवं जावणप्फइकाइया—॥ इति प्रवचनसारोद्धारे १४९ द्वारे॥

पञ्च सम्यक्त्वानां कालनियममाह—

अंतमुहूत्तोवसमो, छावलिसासाणवेयगोसमओ, साहियतित्तीसायरखइयो दुगुणो खओवसमे ॥

न्द्रिय तिर्यंच स्त्रीओ अने उपर्युक्त त्रण प्रकारना देवताओने पारभविक क्षायिक सम्यक्त्व पण होतुं नथी. कारणके क्षायिक सम्यक्द्दष्टिनो तेओमां उत्पाद थतो नथी. उपर्युक्त संख्यातायुष्कसंज्ञिपंचेन्द्रिय तिर्यंच स्त्रीओ तथा त्रण प्रकारना देवताओने उपशम अने क्षयोपशम सम्यक्त्व थाय छे. एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय अने असंज्ञिपञ्चेन्द्रिय जीवोने ते भव वा परभवनी अपेक्षाए त्रण सम्यक्त्वमांथी एक पण सम्यक्त्व होतुं नथी. बादर, पृथ्वी, जल, वनस्पति, द्वित्रिचतुरिन्द्रिय जीवो अने असंज्ञिपंचेन्द्रियोमां पर्याप्तावस्थामां पारभविक सास्वादन सम्यक्त्व अने 'पर्याप्त संज्ञी पंचेन्द्रियमां तादृ[illegible]

क्षायोपशमसम्यग्दृष्टि थाय छे. ते प्रथमं क्षयोपशम सम्यक्त्वने पामे छे. अन्य तो एम कहे छे के—" अन्यस्तु यथाप्रवृत्ति करणत्रयक्रमेणाऽन्तरकरणे उपशम-सम्यक्त्वं लभते पुञ्जत्रयं त्वसौ न करोत्येव ततश्चौपशामिकसम्यक्त्वाच्च्युतोऽवश्यं मिथ्यात्वमेव याति यथाप्रवृत्तिकरणादि त्रणना अनुक्रमे अन्तरकरणमां उपशम सम्यक्त्व पामे छे अने जीव, त्रण पुंजने नथी करतो ततः पश्चात् उपशम सम्यक्त्वथी चवेलो अवश्य मिथ्यात्वने पामेछे.

प्रथम सम्यक्त्व पामे छे तो कोइ जीव सम्यक्त्वनी साथे देशविरति वा सर्वविरति-

पामे छे. सास्वादन सम्यक्त्वी कंइ पण

पिडानुग्रहशक्तितः ॥

वेदक अने क्षायोपशमिक सम्यक्त्वने पौद्गलिक कहेवामां आवे छे अने उपशम अने क्षायिकने अपौद्गलिक कहेवामां आवे छे. उपशमक्षायिकसम्यक्त्वयोः पुद्गलवेदनस्य सर्वथैवाभावात्.

चार गतिमां संज्ञिपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवने प्रथम सम्यक्त्वनो लाभ थाय छे.

उपशम सम्यक्त्वथी च्युत जीव क्षयोपशम दृष्टि–मिश्रदृष्टि वा मिथ्यादृष्टि थाय छे. सिद्धांतना मत प्रमाणे अनादि मिथ्यादृष्टि जीव, तथाविधसामग्री सद्भावे अपूर्व करण वडे त्रण पुंज करीने शुद्ध पुद्गलोने वेदतो छतो उपशम सम्यक्त्व पाम्या विनाज

क्षायोपशमसम्यग्दृष्टि थाय छे. ते प्रथमं क्षयोपशम सम्यक्त्वने पामे छे. अन्य तो एम कहे छे के—" अन्यस्तु यथाप्रवृत्ति करणत्रयक्रमेणाऽन्तरकरणे उपशम-सम्यक्त्वं लभते पुञ्जत्रयं त्वसौ न करोत्येव ततश्चौपशमिकसम्यक्-त्वाच्च्युतोऽवश्यं मिथ्यात्वमेव याति यथाप्रवृत्तिकरणादि त्रणना अनुक्रमे अन्तरक-रणमां उपशम सम्यक्त्व पामे छे अने जीव, त्रण पुंजने नथी करतो ततः पश्चात् उपशम सम्यक्त्वथी चवेलो अवश्य मिथ्यात्वने पामेछे.

प्रथम सम्यक्त्व पामे छे तो कोइ जीव सम्यक्त्वनी साथे देशविरति वा सर्वविरति-पणुं पामे छे. सास्वादन सम्यक्त्वी कंइ पण

पौंडानुग्रहशक्तितः ॥

वेदक अने क्षायोपशमिक सम्यक्त्वने पौद्गलिक कहेवामां आवे छे अने उपशम अने क्षायिकने अपौद्गलिक कहेवामां आवे छे. **उपशमक्षायिकसम्यक्त्वयोः पुद्गलवेदनस्य सर्वथैवाभावात्.**

चार गतिमां संज्ञिपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवने प्रथम सम्यक्त्वनो लाभ थाय छे.

उपशम सम्यक्त्वथी च्युत जीव क्षयोपशम दृष्टि–मिश्रदृष्टि वा मिथ्यादृष्टि थाय छे. सिद्धांतना मत प्रमाणे अनादि मिथ्यादृष्टि जीव, तथाविधसामग्री सद्भावे अपूर्व करण वडे त्रण पुंज करीने शुद्ध पुद्गलोने वेदतो छतो उपशम सम्यक्त्व पाम्या विनाज

पामतो नथी.

उक्तं च शतकबृहच्चूर्णौ—

उवसमसम्मादिट्ठी—अंतरकरणठिओ कोइ देसविरयंपि लंभइ कोइ पमत्तभावंपि ॥ सासाइणो न किंपि लहे इति ॥

पुंजत्रयसंक्रमश्च कल्पभाष्ये एवमुक्तः मिथ्यात्वदलिकान् पुद्गलानाकृष्य सम्यग्दृष्टिः प्रवर्धमानपरिणामः सम्यक्त्वे मिश्रे च संक्रमयति। मिश्रपुद्गलांश्च सम्यग्दृष्टिः सम्यक्त्वे मिथ्यादृष्टिश्च मिथ्यात्वे सम्यक्-

स्वपुद्गलांस्तु मिथ्यात्वे संक्रमयति न तु मिश्रे ॥

प्रवर्धमानपरिणामी सम्यग्दृष्टिजीव, मिथ्यात्व पुद्गलोने आकर्षी सम्यक्त्वमां अने मिथ्यात्वमां संक्रमावे छे. सम्यग्दृष्टि जीव, मिश्र पुद्गलोने सम्यक्त्वमां संक्रमावे छे अने मिथ्यादृष्टि जीव मिथ्यात्वमां संक्रमावे छे तथा मिथ्यादृष्टि, सम्यक्त्व पुद्गलोने मिथ्यात्वमां संक्रमावे छे पण मिश्रमां नहीं.

मिच्छत्तंमि अखीणे—तिपुंजा सम्मदिट्ठिणो नियमा खीणंमि उ मिच्छत्ते—दुएगपुंजी व खवगोवा ॥

मिथ्यात्व अक्षीण थये छते सम्यग् दृ-

वी. गीतार्थ आत्मज्ञानी ध्यानी सद्गुरुना
चरणकमल सेववाथी सम्यक्त्वनी प्राप्ति
थाय छे.

उपर प्रमाणे सम्यक्त्वना जे जे भेदो कह्या छे, तेनी प्राप्ति माटे प्रयत्न करवो एज उत्तम पुरुषोनुं कर्तव्य छे. आगमोनो नय निक्षेप प्रमाणोथी अनुभव करीने राग द्वेष रहित आत्माना समभाव स्वरूपमां परिणमवुं एज परमसाध्य कर्तव्य छे. समभावे परिणमतां आत्मा केवल ज्ञान प्राप्त करी मोक्ष पामे छे.

सेयंवरो वा आसंवरो वा.
बुद्धो वा अहव अन्नो वा
समभावभावी अप्पा—
लहइ मुक्खं न संदेहो ॥

श्वेतांबर वा दिगंबर, बुद्ध अथवा अन्य वेदान्ती, वैदिक धर्मी, मुसलमान, ख्रीस्ति वगेरे गमे ते होय; परंतु समभावे आत्माने भावी समभावे निश्चलः परिणमी समभावी थाय छे ते मोक्ष पामे छे. ते कर्मावरणनो क्षय करी सम्यक्त्वादिने प्राप्त करी परिपूर्ण गुणमयी बनी सिद्ध बुद्ध परमात्मा थाय छे. सर्व सिद्धान्तनो सार ए छे के सम्यक्त्वादिनी प्राप्ति करी आत्माने समभावे भाववो. समभावे परिणमतां कषायनी मन्दताए अने क्षीणताए निसर्ग सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे अने सकल कर्मने निवारी परिपूर्ण शुद्ध बुद्ध बने छे. समभावे परिणमतां सहजानन्दयोगे सम्यक्त्वनी प्राप्तिनो भव करी शकाय छे.

वी. गीतार्थ आत्मज्ञानी ध्यानी सद्गुरुनां चरणकमल सेववाथी सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे.

उपर प्रमाणे सम्यक्त्वना जे जे भेदो कह्या छे, तेनी प्राप्ति माटे प्रयत्न करवो एज उत्तम पुरुषोनुं कर्तव्य छे. आगमोनो नय निक्षेप प्रमाणोथी अनुभव करीने राग द्वेष रहित आत्माना समभाव स्वरूपमां परिणमवुं एज परमसाध्य कर्तव्य छे.समभावे परिणमतां आत्मा केवल ज्ञान प्राप्त करी मोक्ष पामे छे.

सेयंवरो वा आसंवरो वा.
बुद्धो वा अहव अन्नो वा
समभावभावी अप्पा—
लहइ मुक्खं न संदेहो ॥

आगमसार, नयचक्र आदि ग्रंथोनी सहायताथी ते ग्रंथोना अनुसारे भव्यजीवोना उपकारार्थ षड्द्रव्यविचारग्रन्थ बनाव्यो छे. तेमां कांइ वीतरागनी आज्ञा विरुद्ध भाषण थयुं होय, लख्युं होय, ते त्रिविधे करी मिच्छामि दुक्कडं दउं छुं. आ ग्रंथमां विभ्रम चित्तथी कोइ दोष थयो होय तो ते सुधारवा पंडितपुरुषोए कृपा करवी. **शुभे यथाशक्ति यतनीयं** ए न्यायने अनुसरी में उद्यम कर्यो छे, तेथी हुं मारी महेनत परोपकार थये छते, सफल मानुं छुं,

आ ग्रंथ पंडित पुरुषोने योग्य छे.

आ ग्रंथ वांची व्यवहार मार्गे चाली हृदयमां निश्चय दृष्टि राखशे ते आत्मसुख पामशे.

पाट परंपर तेहनी, रविसागर गुणराग:
सुखसागर शिष्य तेहना, जिनगणंत महाभाग.८
नाम नयणाने रोवतो, बुद्धि कहे छे एम:
भणेगणे जे भावशे, ते पामे सुखभोग. ९
ज्यां लगे शशी भानु रहे, जगमां करे प्रकाश;
तावत् भविजन भानुराग, शह्ने करो सुवास.१०
ए षट्द्रव्य विचार ग्रन्थ, जिनवाणीथी रसाल;
भणशे गणशे ते भवी, लहेशे मङ्गलमाल.॥११॥

संपूर्णम्.

ॐ शान्तिः ३